EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के संदर्भ में बच्चों पर ऑनलाइन शिक्षा का शैक्षिक एवं सामाजिक प्रभाव

ऋचा गंगवार
शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी महिला महाविद्यालय, महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, (उ.प्र.)

सारांश

आधुनिक डिजिटल युग में ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को मौलिक रूप से बदल दिया है। कोविड-19 महामारी ने इसे एक आपातकालीन विकल्प से आगे बढ़ाकर शिक्षा व्यवस्था का एक स्थायी और महत्वपूर्ण स्तंभ बना दिया। भारतीय चिंतन की मूलभूत अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात 'सारी पृथ्वी एक परिवार है', इस बदलाव को एक दार्शनिक एवं नैतिक आधार प्रदान करती है। यह शोध-पत्र इसी संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षा के बच्चों पर पड़ रहे बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह जाँच करता है कि कैसे यह नया माध्यम वैश्विक सहभागिता, समानता, सांस्कृतिक संवाद और साझा मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दे सकता है। साथ ही, यह आलेख डिजिटल शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों और उनके संभावित समाधानों पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: ऑनलाइन शिक्षा, बच्चे, वसुधैव कुटुम्बकम्, वैश्विक नागरिकता, डिजिटल शिक्षण, सामाजिक प्रभाव

भूमिका

21वीं सदी में तकनीकी क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को छुआ है और शिक्षा इससे अछूती नहीं रही। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ने ज्ञान की दुनिया की सीमाओं को तोड़ दिया है, जिससे शिक्षा अब चारदीवारी के भीतर सिमटी हुई कोई प्रक्रिया नहीं रह गई है। ऑनलाइन शिक्षा के इस दौर में एक बच्चा भारत के किसी छोटे शहर में बैठकर विश्व के किसी भी कोने के शिक्षक से सीख सकता है, किसी अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय का आभासी भ्रमण कर सकता है और विभिन्न देशों के साथियों के साथ परियोजना बना सकता है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को, जो सारे विश्व को एक कुटुंब मानता है, साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम प्रतीत होता है। बच्चे किसी भी समाज का भविष्य और सबसे संवेदनशील घटक होते हैं। उनका बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक और नैतिक विकास ही एक बेहतर विश्व के निर्माण की आधारशिला है। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा के इस नवीन, शक्तिशाली परन्तु अपेक्षाकृत नए माध्यम के बच्चों के सर्वांगीण विकास पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए। यह शोध-पत्र इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, भारतीय दर्शन के सार्वभौमिक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में इस विश्लेषण को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

वसुधैव कुटुम्बकम्: एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण

'वसुधैव कुटुम्बकम्' प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'महोपनिषद' से लिया गया एक ऐसा सूत्र है जो मानवता को एकजुट करने वाली चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। यह विचार भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषायी या राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण सृष्टि को एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखता है। यह दृष्टि सह-अस्तित्व, सहयोग, करुणा और साझी जिम्मेदारी की भावना पर आधारित है। आज के वैश्वीकृत परिदृश्य में, जहाँ चुनौतियाँ भी वैश्विक हैं (जैसे जलवायु परिवर्तन, महामारी), इस दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना बच्चों में 'वैश्विक नागरिक' के गुण विकसित करने का मार्गदर्शन करती है। यह उन्हें सिखाती है कि ज्ञान किसी एक राष्ट्र, जाति या संप्रदाय की सम्पत्ति नहीं है, बल्कि वह समूची मानवता की साझी धरोहर है जिसे सबके साथ मिल-बाँटकर और आदान-प्रदान करके ही समृद्ध बनाया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा इस साझेपन को व्यवहार में लाने का शायद अब तक का सबसे सक्षम माध्यम है, क्योंकि यह भौतिक दूरियों को मिटाकर ज्ञान के प्रवाह को सहज एवं सार्वभौमिक बनाती है।

ऑनलाइन शिक्षा का बच्चों पर शैक्षिक प्रभाव

ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक कक्षा की सीमाओं को लांघते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। इसके प्रमुख शैक्षिक लाभों को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

सीखने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं लचीलापन: प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति और शैली अलग होती है। ऑनलाइन प्लेटफार्म्स रिकॉर्डेड लेक्चर, इंटरएक्टिव सिमुलेशन और विविध मल्टीमीडिया सामग्री के माध्यम से बच्चे को अपनी गति से, बार-बार और पसंदीदा तरीके से सीखने की स्वतंत्रता देते हैं। यह व्यक्तिकृत शिक्षा (Personalized Learning) की ओर एक बड़ा कदम है।

डिजिटल साक्षरता एवं तकनीकी कौशल का विकास: डिजिटल युग में कम्प्यूटर, इंटरनेट और विभिन्न सॉफ्टवेयर का सार्थक उपयोग जानना एक मूलभूत कौशल बन गया है। ऑनलाइन शिक्षा बच्चों को इन टूल्स के साथ सहज एवं जिम्मेदारीपूर्वक काम करना सिखाकर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करती है।

विश्वस्तरीय संसाधनों तक अभूतपूर्व पहुँच: एक साधारण स्मार्टफोन और इंटरनेट कनेक्शन के दमार अब कोई भी बच्चा दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के मुक्त पाठ्यक्रम (MOOCs), अंतर्राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालयों, विज्ञान के आभासी प्रयोगशालाओं और वैश्विक विशेषज्ञों के व्याख्यानों तक पहुँच बना सकता है। यह ज्ञान के क्षेत्र में एक प्रकार की लोकतांत्रिक क्रांति है।

आत्म-अधिगम एवं जिज्ञासा को प्रोत्साहन: ऑनलाइन शिक्षा की प्रकृति बच्चे को स्वयं खोजबीन करने, प्रश्न पूछने और स्व-निर्देशित तरीके से सीखने के लिए प्रेरित करती है। यह उनकी जन्मजात जिज्ञासा को बनाए रखते हुए जीवनपर्यंत सीखने की आदत विकसित करने में मदद कर सकती है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सन्दर्भ में देखें तो, यह सब बच्चे के मन में यह भावना पैदा करता है कि ज्ञान की कोई सीमा या एकाधिकार नहीं है। गणित के एक फार्मूले से लेकर इतिहास के एक तथ्य तक, सब कुछ मानवता की साझी उपलब्धि है, जिसे दुनिया के किसी भी कोने से सीखा और समझा जा सकता है। इससे एक 'वैश्विक मस्तिष्क' (Global Mindset) का निर्माण होता है।

ऑनलाइन शिक्षा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान देना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार सामाजिक प्राणी बनाना भी है। ऑनलाइन शिक्षा इस दृष्टि से भी गहरा प्रभाव डाल रही है:

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं समझ का विस्तार: जब भारत का एक बच्चा किसी अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में जापान, ब्राजील या केन्या के बच्चों से बातचीत करता है, तो उसे पता चलता है कि दुनिया विविधताओं से भरी है। उसे विभिन्न त्योहारों, खान-पान, रहन-सहन और परम्पराओं का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। यह अनुभव उसकी सोच को संकीर्णता से मुक्त करता है और एक गहरी सांस्कृतिक सहिष्णुता पैदा करता है।

वैश्विक सहयोग एवं मैत्री की भावना: अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन प्रतियोगिताएं, समूह परियोजनाएं और चर्चा मंच बच्चों को दूसरे देशों के साथियों के साथ मिलकर काम करने का अवसर देते हैं। इस सहयोग से न केवल शैक्षिक लक्ष्य पूरे होते हैं, बल्कि मैत्री के बंधन भी बनते हैं, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को सच्चाई में बदलते हैं।

सामाजिक विषमताओं को कम करने की संभावना: सैद्धांतिक रूप से, ऑनलाइन शिक्षा उन बच्चों के लिए एक समान मंच प्रदान कर सकती है जो शारीरिक अक्षमता, दूरदराज के इलाके में रहने या सामाजिक वर्जनाओं के कारण पारंपरिक स्कूली शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। यह एक समावेशी शिक्षा व्यवस्था की ओर इशारा करता है।

विविधता में एकता का बोध: विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चे जब एक ही डिजिटल स्पेस में मिलते हैं, तो उन्हें एहसास होता है कि चाहे बाहरी रूप-रंग या भाषा अलग हो, पर मनुष्य की मूलभूत आकांक्षाएं, भावनाएं और सपने लगभग एक जैसे होते हैं। यह 'विविधता में एकता' के भारतीय आदर्श को वैश्विक स्तर पर स्थापित करता है।

बच्चों पर पड़ने वाले मनोवैज्ञानिक प्रभाव: चिंताएँ एवं अवसर

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ कुछ गंभीर मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिन पर ध्यान देना अत्यावश्यक है:

सामाजिक अलगाव एवं संवेदनशीलता का अभाव: स्कूल सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं होता; वह एक सामाजिक प्रयोगशाला है जहाँ बच्चा साथियों के साथ खेलता, झगड़ता, मनाता है, आमने-सामने के संवाद में शारीरिक भाषा को पढ़ता है और सहानुभूति जैसे मानवीय गुण सीखता है। ऑनलाइन माध्यम में इस सामाजिककरण की प्रक्रिया सीमित हो जाती है, जिससे अकेलेपन की भावना और संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Quotient) के विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

स्क्रीन टाइम में वृद्धि एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव: लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठे रहने से बच्चों की आँखों पर दबाव, शारीरिक सक्रियता में कमी, मुद्रा संबंधी समस्याएं और नींद के चक्र में गड़बड़ी जैसी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ पैदा होती हैं।

एकाग्रता में कमी एवं ध्यान भटकाव: इंटरनेट एक विशाल विचलित करने वाली दुनिया है। ऑनलाइन कक्षा के दौरान सोशल मीडिया, गेम्स या अन्य वेबसाइट्स पर जाने का लालच बच्चों की एकाग्रता को तोड़ सकता है, जिससे गहन अध्ययन की क्षमता प्रभावित होती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए यह आवश्यक है कि ऑनलाइन शिक्षा को मानवीय स्पर्श और सामाजिक संवाद से पूरी तरह अलग न किया जाए। हाइब्रिड मॉडल, जहाँ ऑनलाइन शैक्षणिक सत्रों के साथ-साथ ऑफलाइन सामूहिक गतिविधियों, खेलकूद और सामुदायिक कार्यों का समावेश हो, एक बेहतर समाधान हो सकता है।

प्रमुख चुनौतियाँ एवं समाधान के मार्ग

ऑनलाइन शिक्षा की राह में कुछ ढांचागत और सामाजिक चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें दूर किए बिना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श अधूरा रहेगा:

डिजिटल विभाजन (Digital Divide): यह सबसे बड़ी चुनौती है। शहरी-ग्रामीण, धनी-निर्धन, लिंग आधारित अंतर के कारण सभी बच्चों के पास स्मार्ट डिवाइस, तीव्र इंटरनेट और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएँ नहीं हैं। इससे शिक्षा की खाई और चौड़ी होने का खतरा है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शिक्षक-छात्र का प्रत्यक्ष संवादहीनता: पारंपरिक कक्षा में शिक्षक बच्चे की बॉडी लैंग्वेज से ही उसकी समझ या उलझन को भाँप लेते हैं। ऑनलाइन मोड में, विशेषकर बड़ी कक्षाओं में, यह व्यक्तिगत संपर्क कमजोर पड़ जाता है।

मूल्य-आधारित शिक्षा का संकट: सहानुभूति, ईमानदारी, सहयोग जैसे चरित्र निर्माणकारी मूल्य अक्सर सामूहिक गतिविधियों और शिक्षक के व्यक्तित्व के माध्यम से ही अंतरित होते हैं। केवल तकनीकी माध्यम से इन्हें पहुँचाना एक जटिल कार्य है।

समाधान के सुझाव :

समावेशी डिजिटल नीतियाँ: सरकार को समाज के हर वर्ग तक सस्ते इंटरनेट, डिजिटल उपकरण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम पहुँचाने पर जोर देना चाहिए। सामुदायिक डिजिटल केन्द्रों का निर्माण एक अच्छा कदम हो सकता है।

शिक्षकों का पुनःप्रशिक्षण (Re-skilling): शिक्षकों को केवल तकनीक का उपयोग सिखाना ही नहीं, बल्कि ऑनलाइन माध्यम में भी प्रभावी संवाद कायम करने, रचनात्मक गतिविधियाँ डिजाइन करने और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर नजर रखने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

मूल्य-केंद्रित पाठ्यक्रम डिजाइन: पाठ्यक्रम में ऐसे मॉड्यूल शामिल किए जाएँ जो वैश्विक नागरिकता, पर्यावरण संरक्षण, साइबर सुरक्षा और नैतिकता जैसे विषयों पर चर्चा को प्रोत्साहित करें। वर्चुअल एक्सचेंज प्रोग्राम और सांस्कृतिक प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा दिया जाए।

अभिभावकों की सहभागिता: ऑनलाइन शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्हें बच्चे के समय-प्रबंधन, स्क्रीन टाइम नियंत्रण और सुरक्षित इंटरनेट उपयोग में मार्गदर्शन करने के लिए जागरूक करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि ऑनलाइन शिक्षा एक दोधारी तलवार की भाँति है। एक ओर, यह बच्चे के लिए ज्ञान के विश्व-भंडार के द्वार खोलती है, उसे वैश्विक नागरिक बनने का अवसर देती है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को चरितार्थ करने की ओर ले जाती है। दूसरी ओर, यह सामाजिक दूरी, मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ और डिजिटल असमानता जैसे गंभीर खतरे भी उत्पन्न करती है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम इस शक्तिशाली माध्यम का उपयोग सचेतन, संतुलित और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण तरीके से करें। ऑनलाइन शिक्षा को पारंपरिक शिक्षा के सामाजिक और मानवीय पहलुओं का स्थानापन्न नहीं, बल्कि एक पूरक के रूप में विकसित करना होगा। यदि हम डिजिटल विभाजन को पाटने, शिक्षकों को सशक्त बनाने और मूल्य-आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने में सफल होते हैं, तो ऑनलाइन शिक्षा न केवल बच्चों के व्यक्तिगत विकास, बल्कि एक अधिक जुड़े हुए, सहिष्णु और शांतिपूर्ण वैश्विक समाज के निर्माण में एक निर्णायक भूमिका निभा सकती है। अंततः, तकनीक साधन है, साध्य नहीं। साध्य तो वही रहना चाहिए - एक संवेदनशील, जिम्मेदार और समग्र रूप से विकसित मानव का निर्माण, जो पूरी पृथ्वी को अपना कुटुम्ब मानते हुए जीवन जीने का कौशल सीख सके।

संदर्भ सूची (References)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (भारत सरकार)

यूनेस्को: कोविड-19 संकट के दौरान और बाद में शिक्षा पर रिपोर्ट्स

UNICEF: सभी के लिए डिजिटल शिक्षा पर प्रकाशन

भारतीय दर्शन में शिक्षा के सिद्धान्त - विभिन्न ग्रंथ

शैक्षिक तकनीकी एवं ऑनलाइन अधिगम पर समकालीन शोध-पत्र